ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

महिला बीड़ी श्रमिकों की आर्थिक समस्याएं : एक अध्ययन (रीवा संभाग के विशेष संदर्भ में)

Economic Problems of a Female Bidi Worker: A Study (With Special Reference to Rewa Division)

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

अनुज पाण्डेय
गेस्ट फैकल्टी,
वाणिज्य विभाग,
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा, म.प्र., भारत

सारांश

बीड़ी उद्योग इतना विशाल और व्याप्त है यह इसके क्रमिक विकास पर परिचायक है। बीड़ी निर्माताओं द्वारा जिले में बीड़ी का निर्माण करवाया जाता है। श्रमिकों को देंतूपत्ता जिसका उपयोग रैपर बनाने में किया जाता है। तम्बाकू तथा धागा उपलब्ध करवाया जाता है। शोषण से मुक्ति हेतु इसकी कीमतों का निर्धारण राज्य सरकार द्वारा किया जाता है। निर्धारित दरों पर बीड़ी उत्पादकों को कच्चे माल की आपूर्ति की जाती है। जिले में बीड़ी उद्योग व्यवसाय पर आधारित है जो पंजीकृत एवं गैर पंजीकृत बीडी उद्योग है, जिले में बीड़ी का उत्पादन निजी पारिवारिक स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ व्यवसाय के लिए बीड़ी उत्पादन किया जाता है।

The beedi industry is so vast and widespread that it reflects its gradual growth. Beedi makers manufacture beedis in the district. Give the workers a paper which is used in making wrappers. Tobacco and thread are provided. Its prices are determined by the state government for freedom from exploitation. Beedi producers are supplied raw materials at fixed rates. The beedi industry in the district is based on business which is a registered and non-registered beedi industry, the production of beedi in the district is catering to the private family local needs as well as beedi production for business.

मुख्य शब्द : बीड़ी उद्योग, श्रमिकों की आर्थिक समस्याएं, तृप्ति सिंघई, शराबखोरी एवं सट्टेबाजी।

Beedi Industry, Economic Problems of Workers, Trupti Singhai, Alcoholism and Betting.

प्रस्तावना

भारत एक विकासशील देश है जिसकी सामाजिक तथा आर्थिक संरचना अधिकांशतः अर्द्धसामंतवादी तथा अर्द्धपूंजीवादी है। प्रायः सभी आर्थिक विचारकों ने आर्थिक संरचना के महत्व को स्वीकार किया है। भारतीय समाज में एक ओर स्त्रियों को हजारों वर्षों से परंपराओं में जकड़ कर रखा गया है, वहीं दूसरी ओर आर्थिक मामलों में भी आत्मनिर्णय का अधिकार उन्हें नहीं दिया गया है। महिला श्रमिकों के सामने दोहरी समस्याएं हैं। एक तो उन्हें समाज के निर्धारित मूल्यों के विपरीत घर से बाहर श्रम के लिए जाना होता है वहीं दूसरी ओर वे परिवारिक दायित्वों को भी भली–भांति निभा रही है।

विभिन्न जाति एवं धर्म की महिलायें बीड़ी श्रमिकों में से 88.61 प्रतिशत महिलायें बीड़ी बनाने से प्राप्त आय को स्वयं व्यय करती हैं, 8.05 प्रतिशत पति को देती हैं तथा 3.34 प्रतिशत पिता को देती हैं। प्रायः सभी महिला बीड़ी श्रमिक अपनी आमदनी को स्वयं के पास रखने के अधिकार को प्राप्त करना चाहती हैं तथा लगभग 3.33 प्रतिशत अपने पास नहीं रखना चाहती हैं।

शोध–प्रविधि

शोध पत्र को पूरा करने के लिये सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। समंक संकलन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। बीड़ी श्रमिकों, बीड़ी प्रबंधक एवं बीड़ी उद्योग से संबंधित अनेक वर्गों के लोगों से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर प्राथमिक समंक जुटाये गये हैं। द्वितीयक समंक उद्योग विभाग से प्राप्त प्रकाशित आंकड़ों एवं अन्य पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त

किया गया है। समंकों का वर्गीकरण एवं सारणीयन सांख्यिकीय विधियों से किया गया है। तत्पश्चात् विश्लेषण कर परिणाम निकाला गया है।

साहित्यवलोकन

विभिन्न विद्वानों ने बीड़ी उद्योग पर शोध कार्य किये हैं–

तृप्ति सिंघई

'बीड़ी उद्योग से संबंधित महिला श्रमिकों की सामाजिक परिस्थिति एवं स्वास्थ का मानवशास्त्र अध्ययन'', निर्देशक रमेश चौबे, सन् 2002, डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

इस शोध प्रबंध में शोधार्थी ने बीड़ी उद्योग से संबंधित महिलाओं की सामाजिक परिस्थिति एवं स्वास्थ पर शोध किया है।

नमिता मोदी 'दमोह क्षेत्र में बीड़ी बनाने का उद्योग और ग्रामीण विकासः एक भौगोलिक मूल्यांकन'', 1998, डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)

संजय काशीनाथ चवण

''सोलौर शहर में महिला बीड़ी श्रमिकों का एक अध्ययन,2012, सी.एस. भानुमते शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र।

इन शोधार्थियों ने देश के अलग–अलग विश्वविद्यालयों से अलग–अलग क्षेत्रों के बीड़ी श्रमिकों पर शोध किये हैं, किन्तु म.प्र. के रीवा संभाग जो अपनी सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से अलग है यहां के बीड़ी श्रमिकों की आर्थिक समस्याएं अन्य क्षेत्रों की समस्याओं से अलग है, अतः रीवा संभाग की बीड़ी महिला श्रमिकों की आर्थिक समस्याओं पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई।

परिकल्पना

1. रीवा संभाग की महिला बीड़ी श्रमिकों की दशा संतोषजनक नहीं है।
2. महिला बीड़ी श्रमिक अपनी आय का अधिकांश भाग अपने घर के मुखिया को सौंप देती हैं।
3. महिलाये अनेक घर के मुखिया को सौंप देती हैं।
4. महिलायें अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संकीर्णताओं से घिरी हुई हैं।
5. वे समाज की अन्य महिला श्रमिकों से भिन्नता रखती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. रीवा संभाग में महिला बीड़ी श्रमिकों का आर्थिक अध्ययन करना।
2. अनेक वर्गों की महिला बीड़ी श्रमिकों की आर्थिक भिन्नता का अध्ययन करना।
3. संभाग की महिला बीड़ी श्रमिकों की आर्थिक समस्याओं की पड़ताल करना।
4. बीड़ी श्रमिकों की समस्याओं के समाधान के उपाय सुझाना।
5. बीड़ी उद्योग को अधिक प्रभावकारी बनाकर रोजगारोन्मुख बनाना।
6. बीड़ी श्रमिकों की पर्यावरणीय समस्याओं का अध्ययन कर स्वच्छ वातावरण के लिये सुझाव देना।

विषय–विश्लेषण

रीवा संभाग के बीड़ी श्रमिक विशेष कर महिलाऐं अनेक समस्याओं का सामना कर रही हैं।

कम आय

महिला बीड़ी श्रमिकों की आय उनके द्वारा किये कार्यों के अनुपात में बहुत कम है जिससे उनके लिये भोजन, वस्त्र, आवास एवं चिकित्सा जैसी मूल समस्यायें मुश्किल से पूरी हो पाती हैं, बड़े कार्यक्रम जैसे विवाह, मृत्यु संस्कार एवं मुंडन संस्कार आदि अधिक व्यय वाले कार्यो को खुद के बलबूते करने में असमर्थ रहती है।

ऋण ग्रस्तता

महिला श्रमिकों की दयनींय आर्थिक स्थिति के कारण पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक आदि संस्कारों को पूरा करने के लिये उच्च ब्याज दर पर पैसे लेने पड़ते हैं कभी–कभी अपने आभूषण, बर्तन, मकान आदि साहूकारों के पास बंधक रखकर ऋण प्राप्त करते हैं।

शराबखोरी एवं सट्टेबाजी

समय के परिवर्तन के साथ–साथ महिला बीड़ी श्रमिक भी शराबखोरी एवं सट्टेबाजी में अपव्यय करने लगी है। जिससे की पारिवारिक माहौल खराब होता है तथा अशांति का वातावरण निर्मित होता है, जिसका प्रभाव उनकी संतानों पर विपरीत पड़ता है।

समाधान

शासन की बीड़ी बनवाने की पारिश्रमिक दर निर्धारित करनी चाहिए, जिससे महिला बीड़ी श्रमिकों की आय में वृद्धि हो सके, यदि किसी कारण बीड़ी का भाव बढ़ता है तो समाज में धूम्रपान के स्तर में कमी आ जायेगी। बैंकों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा उचित ब्याज दर पर बीड़ी श्रमिकों को ऋण प्रदान करना चाहिये, संकट के समय किसानों के ऋण मुक्ति के समान बीड़ी श्रमिकों का भी ऋण मुक्ति की जानी चाहिऐ ताकि उनके आभूषण, बर्तन व जमीन बेचने की आवश्यकता न पड़े। सामाजिक संगठनों को नशीली वस्तु के प्रयोग पर रोग लगाई जानी चाहिये, इससे श्रमिकों की आर्थिक दशा में सुधार होगा। एवं पारिवारिक सामाजिक शांति प्राप्त होगी एवं अपराधों में कमी आयेगी।

निष्कर्ष

रीवा संभाग में बीड़ी बनाने का कार्य पूंजी विहीन लोगों द्वारा किया जाता है, उनकी आय में न्यूनतम प्राप्ति के कारण आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऋण ग्रस्तता, शराबखोरी एवं सट्टेबाजी में वृद्धि के कारण सामाजिक अशांति एवं अपराध में वृद्धि होती है। सरकार समाज एवं अन्य प्रबुद्ध लोगों का कर्तव्य है कि महिला बीड़ी श्रमिकों की समस्याओं पर गहन विचार कर प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मोदी, नमिता – ''दमोह क्षेत्र में बीड़ी बनाने का उद्योग और ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक मूल्यांकन'', डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), 1998।*

2. चवण, संजय काशीनाथ – ''सोलौर शहर में महिला बीड़ी श्रमिकों का एक अध्ययन,'' सी.एस. भानुमते शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र, 2012।
3. सिंघई, तृप्ति ''बीड़ी उद्योग से संबंधित महिला श्रमिकों की सामाजिक परिस्थिति एवं स्वास्थ का मानवशास्त्र अध्ययन'' डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), 2002।
4. Tiwari, Joti – "Dimensions of Bidi making industry in Sagar region – A Geographical Study", Dr. Harisingh Gour Central University, Sagar (M.P.), 1993
5. M.S. Makandar – "Bidi Workers in Nipani – A Sociological Study", Shivaji University, Maharashtra, 1982
6. Nisha jain, Bidi majdur jivan star avam sanskrutik pushtibhumi sagar jile ke bidi majduro ka samajsastriya adhyayan , 1987, ramesh Chaube and shreenath Sharma, Dr. Harisingh Gour kendriya Vishwavidyalaya, sagar.